साइकिल

छोटी दुकान : धाकड़ पकवान

रविकांत

बच्चों को और बड़े होने के बावजूद कहीं न कहीं बच्चे रह गए बड़ों को बहुत दिनों से दूर से बजती साइकिल की घंटियां सुनाई दे रही थी, लेकिन साइकिल थी कि करीब आने का नाम ही नहीं ले रही थी। अब ये कोई कसी-कसाई साइकिल तो थी नहीं, कि घंटी के पीछे पीछे खुद भी दौड़ी-दौड़ी चली आती। इसके तो पुर्जे भी गढ़ने थे, ठोंक पीटकर दुरस्त करने थे। हरेक पुर्जे को उसकी सही जगह पर ठीक से कसना भी था। सभी जानते हैं कि नई साइकिल को ढंग से कसना कितना जरूरी है वरना उसके अंजर-पंजर को बिखरते वक्त नहीं लगता।

किसी साइकिल को कसना तो फिर भी आसान हुआ करता है, क्योंकि उसके पुर्जे थोक के भाव से बने बनाए मिल जाते हैं। लेकिन जब कोई साइकिल यह तय कर ले कि उसे तो किशोरियों व किशोरों के मन को भाने वाली एक पत्रिका बनना है, तब उसे कसना कई गुना मुश्किल काम हो जाता है। पहले तो आपको यह तय करना पड़ता है कि इस साइकिल को कसने में किस-किस पुर्जे की जरूरत होगी व कौनसा पुर्जा कहां लगेगा। अब यह भी जरूरी नहीं है कि सभी जरूरी पुर्जों का नक्शा आपके पास पहले से मौजूद हो। बहुत मुमकिन है कि कुछ पुर्जों के डिजाइन तो बने बनाए मिल जाएं लेकिन कइयों को आपको खुद डिजाइन करना पड़े। फिर आपको खोजना पड़ता है कि फलां पुर्जे को कौन गढ़ कर दे सकता है। जब पुर्जे गढ़ने वाला मिल भी जाए व पुर्जे बनाने की हामी भी भर ले तो उसका लगातार पीछा करना पड़ता है कि वह पहले कभी न बनी और अभी तक अन-बनी साइकिल के पुर्जे को गढ़ कर दे ही दे। अब इस साइकिल के पुर्जे कोई लोहे के हैंडल, चक्का, चेन आदि तो हैं नहीं कि एक बार सांचा बना कर धड़ाधड़ उसका उत्पादन शुरू कर दिया जाए। इसकी तो खासियत ही यह है कि किसी एक साइकिल के लिए एक पुर्जा सिर्फ और सिर्फ एक बार ही गढ़ कर एक ही साइकिल में काम लिया जा सकता है। अगली साइकिल में पुर्जे का नाम तो वही हो सकता है लेकिन उसे गढ़ने में काम आने वाली चीज पूरी तरह से जुदा हो सकती है। गजब यह भी है कि इस साइकिल के पुर्जे ठीक से गढ़े जाएं, इसके लिए इसे गढ़ने वालों को भी लगातार गढ़ने की जरूरत बनी रहती है। ऐसी ही मुश्किल साइकिल को हर दुमाही में गढ़ने का जिम्मा सुशील व शशि ने अपने सहयोगियों के साथ न सिर्फ उठाया है बल्कि उसकी पहली साइकिल को बड़ी ही खूबसूरती के साथ गढ़ कर हमारे सामने पेश भी कर दिया है। अब यह हम पर है कि हम इसकी सवारी करके दुनिया भर की सैर का लुत्फ उठाएं।

अगर आप किताबों/पत्रिकाओं को सिर्फ सरसरी तौर पर उलटने-पलटने के आदि हो चुके हैं तो यह साइकिल आपके लिए बेकार है। इसका मुख पृष्ठ देखकर ही आपका मन ठिठक-सा जाता है। उस पर सूट-बूट को डाटे हुए एक सींकिया पहलवाननुमा इंसान अपनी साइकिल के छंटाक भर कैरियर पर किस्म-किस्म का मनों या टनों सामान लादकर आता दिखलाई पड़ता है। आपको अगर इस बात का थोड़ा अफसोस हो कि क्यों हमारा समाज आजादी के दशकों बाद भी काले कोट-पैंट व टोप वाले इंसान की अगुवाई में ही एक नई दुनिया की सैर करवाने के लिए मजबूर है, तो यह बहुत जल्द ही छंट जाने वाला है।

आप सोचते रह जाते हैं कि इसमें तो दुनिया में पाई जाने वाली बच्चों की रुचि की शायद कोई चीज बाकी नहीं छोड़ी। फिर भी आप इंटरनेट के जमाने के प्राणी होने की वजह से इसकी सर्फिंग के इरादे से इसे पलटना शुरू करें तो पाते हैं कि आप इसकी लहरों पर सवार होकर सर्फ कर ही नहीं पाते। हर लहर के चढ़ते-उतरते ही उस जगह पर आलथी-पालथी मारकर बैठने को जी करता है। और इस तरह हर बार, हर लहर की चोटी से घाटी में फिसलते हुए और चढ़ाई चढ़ कर चोटी तक पहुंचते हुए आपको वक्त का पता ही नहीं चलता। इससे गुजरते हुए आप पाते हैं कि यह साइकिल जादू भरी है। कभी यह कहानियों के पहियों पर लुढकती है तो कभी कविता के पंखों पर सवार होकर उड़ने लगती है, मजे की बात यह है कि चाहे यह लुढ़के या उड़े, चित्रों के समुद्र में तैरना व डुबकियां लगाना, पलटियां खाना, गोते मारना आदि कभी नहीं भूलती है। इसमें ऐसी कोई जगह नहीं, जहां पर कोई चित्र ना हो, जहां पर आपको लगे कि अरे यहां पर कोई चित्र नहीं है, वहां पर कोने में लगे अपने अंगूठे को हटा कर अपनी निगाह डालिये, आपको एक बहुत छुटकी-सी साइकिल सरकती नजर आ जाएगी।

जब इसकी कहानियों के पहिये बड़े हो जाते हैं तो यह धीमे-धीमे लुढ़कती है और कहानियों के पहिये छोटे होते ही यह फर्राटे से रपटने लगती है। कभी यह 'उड़ती चील' बन कर मंडराती है और उसकी छाया में कागज के टुकड़ों को रख कर, उन टुकड़ों के रुपयों में बदलने के जादू में आपको बांध लेती है, तो कभी यह 'साइकिल' की कहानी सुनाते सुनाते आपको सदियों पीछे ले जाती है। कभी यह 'संकरे बाजार में ऊंट' पर बैठकर तीसरी-चौथी मंजिल पर बने बाजार की किसी दुकान से महीने भर का राशन खरीद कर एक रोजमर्रा के काम को भी रोमांचक बना देती है। आपको हैरत हो सकती है कि पहले जब मॉल नहीं हुआ करते थे तब भी एक मंजिल मसालों की तो दूसरी अनाजों की हुआ करती थी। तो कभी यह 'मम्मी की मेज' पर बैठकर खुद के नाम चिट्ठी-पत्री लिखने लगती है, आखिर चिट्ठी पाना और उसके भीतर क्या है इसके रोमांच का अहसास किसको अच्छा नहीं लगता। कभी यह 'ये कौन चित्रकार' के बहाने मन की आंखों से चित्र बनाने वाले का किस्सा सुनाने लगती है। तो कभी यह 'कवया' को जंगल में ले जाकर 'शेर' को रोज कोई न कोई किस्सा गढ़ कर सुनाने लगती है। जब यह जंगल-जमीन की सैर करते-करते ऊबती है तो 'दो जलेबियों' के पहाड़ पर चढ़कर आसमान में छलांग लगा देती है। कभी यह जिंदगी भर खामोश रहने वाले 'मिस्टर नो' की धरती को चीरने वाली गगनचुंबी चीख बन जाती है, तो कभी यह कंगूरों को टिकाये रखने वाली नींव की ईंट बनकर 'विशाखापट्टनम का ईश्वर' की कहानी कहने लगती है, जो हमेशा क्रिकेट टीम की चमचमाती कामयाबियों की धुंध में खोया रहता है। इसकी खड़-खड़, कड़-कड़ करती आवाजों के 'पुल' बनते हैं जिन पर ढेरों यात्री आवा-जाही करते रहते हैं। जब बहुत दौड़ लगाकर और उड़कर यह थकती है तो 'गूंगा गीत' गाने लगती है और कभी न बोल पाने वाले बच्चों के भावों की अभिव्यक्ति से हमें अभिभूत कर देती है। कभी यह खूंखार लकड़बग्गे के भीतर छुपे दयालुपन को निकाल लाती है तो कभी 'चटनी' के चटोरों को चटनी बनने से बचा लाती है। कभी यह मुंहफट 'धानी' बनकर नानी को हक्का-बक्का करने वाला जवाब देती है तो कभी अपने पहियों को पेड़ों की डाली में अटका कर, उल्टा लटक कर, आंखे गड़ाकर मक्खी और मच्छर में अन्तर खोजने लगती है। कभी यह 'इंडोनेशिया के जज' की तरह असली इंसाफ करती है, जिसमें नियमानुसार इंसाफ तो होता ही है, उसके साथ-साथ कोर्ट में मौजूद हरेक व्यक्ति को, उस इंसाफ के शिकार व्यक्ति की मदद किए जाने का आदेश भी शामिल होता है, जिसे खुशी-खुशी सभी कबूल करते हैं। कभी यह प्याली से बिना उंगली गीला किये सिक्के को निकालने की चुनौती दे खुद खर्राटे भरने लगती है। जब तक आप पहेली को हल कर पाएं तब तक यह गहरी नींद से ताजादम हो कर आपको 'गालिब' की बची-खुची हवेली की सैर कराने ले चलती है। गालिब की भीड़ भरी हवेली से निकलते ही आपका सामना अखिल भारतीय बिल्ली मंच के जुलूस से हो जाता है, जो चूहों की खैर-ख्वाही में सड़कें रौंद रहा होता है, और चूहे बेचारे सोच रहे होते हैं कि बिल्लियों को किसकी ज्यादा फिक्र है, खुद के नाश्ते की या चूहों की जिंदगी की। उस जुलूस से आप किसी तरह बचकर आगे बढ़ पाएं तो यह आपको किसी सूखे मेवे की दुकान में ले जाकर 'अंजीर के फल और फूल' का किस्सा सुनाने लगती है। आपको हैरत हो सकती है कि भूरे रंग के तथा पेट में छेद वाले अंजीर कभी हरे रंग के गोल-मटोल फूले-फूले भी होते हैं। आपकी हैरत कम हो उससे पहले ही गुप्प से कूदकर मेंढ़क आ जाता है। आप साइकिल रोककर कागज के कुछ मेंढ़क बनाने, कुदाने व उन्हें आपस में लड़ाने का खेल खेल सकते हैं। आप बहुत देर तक मेंढ़क ही न कुदाते रहें इसलिए जल्द ही आपको ऊंट के गले में बंधी 'घण्टियों' की टनटनाहट और 340 कमरों के राष्ट्रपति भवन की फिजूल खर्ची

पर उठते सवाल सुनाई देने लगते हैं। घण्टियों की टनटनाहट के बाद जोर से सीटी मारते 'इंजन और कौए' की कांव-कांव के शोर के साथ वहीं बगल में पेड़ों के तले में दरवाजे खुलने लगते हैं। पेड़ों के दरवाजों से आप सांप-छिपकलियों के देश तक पहुंच जाते हैं। सांपों से मिलवाने, उनसे दोस्ती करवाने का काम विकास सोनी करते हैं। यह दोस्ती इतनी गहरा जाती है कि सांप आपके घर के दरवाजे खटखटाने लगते हैं। आपको थकान से उबारने व तरोताजा करने के लिए तरबूज हाजिर हो कर 'छोटी-छोटी हरी पृथ्वियों' की कहानी कहने लगती हैं। अगर आप तरबूज दबा कर खाने के बाद सुस्ताने को तैयार हो रहे हों तो आपकी नींद भगाने के लिए चींटियां चट से चुटकी भर लेती हैं। इस चुटकी के मारे 'प्रधानमंत्री की छींक' की आवाज सुनकर हर आम और खास इंसान इतना धड़ाधड़ छींकने लगते हैं और प्रधानमंत्री के शुक्रिया अदा न करने तक पूरा देश आछीं-आछीं के शोर से भरा रहता है। छींकों से भरे देश में अगर कोई 'चॉकलेट' खिलाकर आपका यौन शोषण करना चाहे तो उससे बचने के तरीकों को दर्शाती चित्रकथा तुरन्त हाजिर हो जाती है, जो नहीं का मतलब नहीं कहना और ऐसे हालातों से निबटने के उपाय सिखलाती है। इसी भागमभाग में आपका सामना ऐसे 'चोर और पहलवान' से होता है जिसमें पहलवान की अम्मी अपने घर आए मरियल से भूखे चोरों को खाना खिलाकर और कुछ नकदी दे कर घर से विदा करती है ताकि भरे पेट से चोर कुछ काम-धाम शुरू करें। आप दुआ कर सकते हैं कि ऐसी अम्मियां सब चोरों को मिलें। वहां से निकलकर आप 'बायस्कोपवाला' फिल्म की सैर कर सकते हैं और उसमें आपका मन ना लगे तो उसे छोड़ कर पहेलियों में सिर खपा सकते हैं। तब तक आपको 'पेड़' से टिककर सुस्ताती 'साइकिल' मिल जाती है- 'पधारो म्हारे' देश का गीत गाते हुए आपको पहाड़ों और वहां बसने वाली चिड़िया स्वॉनो बार्नो से मिलवाने ले जाती है। आप स्वॉनो बार्नो से मिलें और तेज हवा के थपेड़े न खाएं ऐसा होना मुमकिन नहीं, ये हवा के थपेड़े आपको मशहूर ईरानी फिल्मकार अब्बास किरोस्तामी से मिलवाते हैं। हवा के थपेड़ों में डोलती हुई साइकिल 'जापानी रंग' की फूलों की घाटी की सैर करवाने लगती है। आप दुनिया भर के रंगों को निहारने में मगन हो रहे होते हैं कि 'एक गाय की डायरी' से गाय के रंभाने की आवाज के साथ यह सुनाई देने लगता है कि गाय दूध देती नहीं, उससे दूध ले लिया जाता है, हकीकत में तो वह गोबर देती है। इस झटके को किसी तरह झेलकर आगे आप 'मंदिर में एक कवि' से मिलते हैं तो पाते हैं कि अरे यह तो कवयित्री है और वह भी सदियों पहले की। आप हैरानी से दांतों तले उंगलियां दबाने लगते हैं। आप कहीं अपनी उंगलियां ही चट न कर जाएं इसलिए जल्दी ही फिर से साइकिल आपको पुल पर ले जाती है और इस बार पुल बनाने वालों के बारे में बनी कविता न सिर्फ सुनाती है बल्कि उसका मतलब बूझने में मदद करने के लिए एक दूसरे कवि को भी करीब बिठा लेती है। आप नरेश सक्सेना की बातें पढ़ सुनकर हैरत से अपनी आंखें फाड़े सोचने लगते हैं, अरे इसका यह भी मतलब होता है क्या ? अब तक इस साइकिल को दोड़ते-भागते, कूदते-फांदते बहुत वक्त हो चुका है, रात भी हो चुकी है तो रात के अंधेरे में 'टार्च' की रोशनी में आपको दावत का न्योता देती है। आपको खाना कहीं चैन से हजम न हो जाए इसलिए साथ में 'राहुल और रमन' का 'धर्म संकट' भी पेश कर देती है। आखिर धर्म संकटों से पार पाए बगैर किसकी जिंदगी गुजरी है। धर्म संकटों में पड़कर आपके दिमाग का दही होने से बचाने के लिए धीमे सुर में 'चार चटोरों' की लोरी सुनाने लगती है। 'करांची का चौसा' आम खाने के बाद लोरी को सुनते हुए नींद के आगोश में जाने का मजा कुछ और होता है। भर पेट चौसा आम खाने व दही बड़े गटकने के बाद आपकी गहरी नींद में यह साइकिल बाबा नागार्जुन की कविता 'अकाल और उसके बाद' को सुनाने व अवसाद भरे चित्र दिखाने लगती है। अगर हम और हमारा समाज जागती आंखों से अकाल और उसके बाद की कविता सुनते-गुनते तो हर साल हजारों किसानों को मौत का फंदा खुद गले में लगाने की जरूरत ही क्यों पड़ती? आखिर में यह कविता मौजूद हुक्मरानों और सत्ता पर काबिज मध्यम व उच्च मध्यम वर्ग की अक्ल पर पड़े अकाल के पहाड़ की याद दिला गहरे में कहीं टीस छोड़ जाती है। इसी गहरी टीस के साथ आप अगली साइकिल की सवारी के लुत्फ का इंतजार करते रह सकते हैं। ◆

लेखक परिचयः करीब 23 वर्षों से प्रारंभिक शिक्षा में शिक्षक शिक्षा, शिक्षण सामग्री एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण, शिक्षाक्रम और अनुवाद के क्षेत्र में कार्य। हाल-फिलहाल विभिन्न संस्थाओं के साथ बतौर शैक्षिक सलाहकार कार्यरत हैं।

संपर्क : 9414057424; ravikaant@gmail.com